विशेष

11

सफ़लता के सोपान

कृष्णकांत वशिष्ठ*

बच्चे हमारा गौरव हैं अत: उनकी सफलता सुनिश्चित करना हम सबका दायित्व है। कई बार हमारी कमी और कभी बच्चों में उपयुक्त कौशलों का अभाव उनके सफलता के शिखरों की उपलब्धि में बाधक सिद्ध होते हैं। इस लेख के माध्यम से हम उन सोपानों की चर्चा करेंगे जिन पर ध्यान देने से सफलता सुगमता से प्राप्त की जा सकती है। सर्वप्रथम थोड़ा सोचें कि हमारा बच्चों के प्रति दृष्टिकोण कैसा है? मुख्यत: दो वर्ग मिलेंगे – एक वह जो सोचते हैं कि जैसा हमने अपने माता-पिता से सीखा वैसा व्यवहार करेंगे और स्वाभाविक भी लगता है। दूसरा वह जो सोचते हैं कि हमने बड़ी प्रताड़ना सही थी अत: बच्चों को पूर्ण मुक्त वातावरण देंगे। यह अच्छी बात है किंतु बच्चों को निर्देशन विहीन स्वच्छंद वातावरण देने की अपनी समस्याएँ भी हैं, जैसे – न्यूनतम शिष्टाचार सिखाना भी तो ज़रूरी है वरना संगति के अनुसार वे अपना व्यवहार बना ही लेंगे जो प्रारंभ में अच्छा किंतु बाद में अनुपयुक्त प्रतीत हो सकता है। इसी प्रकार कुसंग संबंधी दिशा निर्देश उचित समय पर प्रेमपूर्वक समझाते हुए दिए जाएँ तो प्रभावी होते हैं। बच्चों को उनके हाल पर छोड़ देना उचित नहीं होता। यह कुसंग दो प्रकार होता है – (1) साथियों का (2) टीवी, इंटरनेट का। दोनों पर दृष्टि रखना और टीवी के सीमित और समुचित प्रयोग पर नियमित रूप से ध्यान देने की बहुत ही आवश्यकता है। इसमें चूक के परिणाम अच्छे नहीं देखे गए हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें और बच्चों के लिए उपयुक्त कौशलों पर सम्यक विचार प्रस्तुत हैं:

1. *स्वस्थ तन-स्वस्थ मन:* बच्चों में अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक आदतों का विकास प्रारंभ से ही सुनिश्चित करना होता है। शारीरिक स्वास्थ्य हेतु नियमित खेलकूद, व्यायाम, प्राणायाम (योग), स्वस्थ आहार (जंक फूड नहीं) और पोषक तत्व आवश्यक हैं। इसे सुनिश्चित करना माता-पिता का कर्त्तव्य है। जहाँ तक मानसिक स्वास्थ्य का संबंध है यह विशेष सजगता का विषय है। यहाँ देखना होगा कि बच्चे का अपने भाई-बहन व साथियों के प्रति कैसा व्यवहार है। कहीं वह बहुत ज़िद्दी, एकांगी, असहिष्णु और अशिष्ट तो नहीं बनता जा रहा

* पूर्व *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016
पता-15/107 एच जी डुप्लेक्स, वसुंधरा, गाज़ियाबाद

है यहाँ ऐसा पाए जाने पर प्रताड़ना तो नहीं किंतु प्रेमयुक्त मार्गदर्शन अपेक्षित है। यह भी देखिए कि वह टी.वी.पर कितना समय गुज़ारता है और क्या-क्या देखता है? सजग माता-पिता इसे कौशलपूर्वक नियमित कर पाते हैं। जहाँ तक संभव हो, सोने-जागने, पढ़ने, खान-पान, विश्राम, खेल-कूद और स्वास्थ्यप्रद आदतों के विकास में मदद करनी चाहिए। हमारी संतति हर क्षेत्र में सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर सके, इसके लिए उनमें कुछ कौशलों का विकास किया जाना चाहिए।

2. *मैं कर सकता हूँ* (Yes I Can): हम बच्चों को घर और विद्यालय की परवरिश के द्वारा भावी जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं। सर्वप्रथम कौशल जो चाहिए वह यह कि बच्चा चुनौती को स्वीकार करने को तैयार हो जाए। यह एकदम से नहीं आता। आवश्यक है कि पहले छोटी-छोटी चुनौतियों को स्वीकार करवा कर सफलता का स्वाद (टेस्ट ऑफ सक्सेस) बच्चों को दिलवाया जाए। इसकी निरंतरता बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करती है कि वे कठिन चुनौतियों को भी स्वीकार करने लगते हैं। यह ऐसा ही है जैसे कि गणित के सरल- सरल प्रश्नों को हल करते रहना चाहिए। यहाँ यह स्मरणीय है कि बच्चों में अपार संभावनाएँ हैं और शोध द्वारा प्रमाणित है। नयी पीढ़ी के बच्चों की बुद्धिलब्धि लगभग 10 अंक तक बढ़ गई है और भावी पीढ़ी वर्तमान से प्राकृतिक रूप में अधिक सक्षम है। आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उनकी क्षमताओं और कमज़ोरियों का सही-सही आभास हो पाए। अपनी कमज़ोरियों को दूर करने के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ और उनकी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर पैदा किए जाएँ।

3. *जुझारूपन*– दूसरा महत्वपूर्ण कौशल है जुझारूपन अर्थात् चुनौती स्वीकार कर लेने के पश्चात् अंतिम सफलता प्राप्त करने तक निरंतर प्रयत्नशील रहना। बच्चों को प्रोत्साहित करें कि कार्य को बीच में न छोड़ें, एक प्रयास पूरा सफ़ल न हो तो विकल्प खोजें और साधनों व तकनीक का पता लगाएँ, जहाँ ज़रूरत हो वहाँ अपने साथियों, माता-पिता और शिक्षकों आदि से चर्चा कर हल खोजने का प्रयास करें। उनके इन प्रयासों में हम सभी वयस्क मदद करें और उनका उत्साह कम न होने दें। दबाव की स्थिति में बताएँ कि तुम अकेले नहीं हो, डटे रहो हम तुम्हारे साथ हैं। इससे बच्चों में कर्त्तव्यनिष्ठा और दायित्व जैसे चारित्रिक गुणों का विकास भी होगा।

4. *प्रश्न करना* (Asking Question): आपने देखा होगा कि जब बच्चे छोटे होते हैं, अनेक प्रश्न करते हैं क्योंकि प्रश्न ही ज्ञान की उपलब्धि में सहायक होते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनकी इस नैसर्गिक प्रवृत्ति का दमन और शमन होता जाता है। यह अच्छा संकेत नहीं है। ऐसा होने से बच्चों की सृजनात्मकता (Creativity) और मौलिकता (Originality) बुरी तरह प्रभावित होती है। अत: बड़े लोगों व शिक्षकों

का कर्त्तव्य है कि बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करें। क्रमश: बच्चे उपयुक्त एवं तार्किक प्रश्न पूछने, उत्तरों का विश्लेषण कर नवीन ज्ञानार्जन करने और समस्या समाधान में निपुणता प्राप्त कर सकेंगे। यह कौशल उन्हें जीवन में सफल बनाने में सार्थक सिद्ध होगा।

5. *बेहतर प्रदर्शन* (Better than the Best) : एक कौशल यह है कि बच्चे जो भी करें, श्रेष्ठतम करने का प्रयास करें अर्थात् अपनी योग्यता-क्षमता को पूरी तरह उपयोग में लाएँ और पढ़ाई व अन्य सभी क्षेत्रों में अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करने में खुशी अनुभव करें। इसके लिए उन्हें समस्या के सही आकलन, अपनी क्षमता और साधन का सही आकलन और उपयुक्त युक्ति का चयन कर प्रयत्नशील होना पड़ेगा। हमें बच्चों की इसमें मदद करनी होगी। एक बार श्रेष्ठ प्रदर्शन करके पूर्ण संतुष्ट एवं शांत हो जाने की चेष्टा न करने दें, वरना अगली बार उससे भी अच्छे (Better than Previous best) के लिए प्रोत्साहित करते रहें। कुछ दिनों में यह उनके स्वभाव और व्यक्तित्व का अंग बन जाएगा और जीवन में उच्चतम शिखरों तक ले जाएगा।
6. *स्वमूल्यांकन* (Self Evaluation): प्राय: बच्चे सीखने और मूल्यांकन के लिए दूसरों पर निर्भर करते हैं। उनमें ऐसी प्रवृत्ति विकसित की जाए कि वह स्वयं पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करने की आदत डालें। इसके लिए उन्हें अच्छा साहित्य (रुचिकर एवं प्रेरणास्पद) उपलब्ध कराकर अध्ययन हेतु प्रोत्साहन दें। प्रारंभ में कुछ आकर्षक इनाम (Rewards) की व्यवस्था ज़रूरी है, बाद में उन्हें यह स्वयं ही अच्छा लगने लगेगा। दूसरी आवश्यकता है, अपने कार्य के सही आकलन कर पाने के कौशल की। कई बार बच्चे वास्तविक से कम मूल्यांकन कर निराश या अधिक मूल्यांकन कर घमंडी हो जाते हैं और सफलता के मार्ग से भटक जाते हैं। इसका बार-बार अभ्यास कराना होगा। अर्थात् उनके मूल्यांकन और मानक मूल्यांकन की बार-बार तुलनाएँ कराकर उनका विश्वास जगाना होगा।
7. *लक्ष्य भेदन* (Goal Accomplishment): लक्ष्य भेदन भी एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। पहले तो लक्ष्य का चयन चाहे तात्कालिक (Immediate), अंतरिम (Intermediate) या अंतिम (Final) कोई सा भी लक्ष्य हो वह अपनी क्षमतानुरूप होना चाहिए। इस कार्य में वयस्कों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। पुन: लक्ष्य के अनुरूप संसाधनों की व्यवस्था करना, युक्तियाँ चुनना, कार्यक्रम तय करना, निरंतर प्रयत्नशील होना, समय का प्रबंधन करना होता है। यह एकदम से किसी के लिए संभव नहीं होता है। इसके विभिन्न चरणों में बच्चों की मदद करके उन्हें अभ्यस्त बनाना पड़ेगा ऐसा होने पर कोई भी लक्ष्य अभेद्य नहीं रह जाएगा।

उपरोक्त सोपान पूर्णत: व्यावहारिक हैं – जिन्होंने इनका अनुसरण किया है – सफलता ने उनके कदम चूमे हैं। इन सोपानों के कुछ अप्रत्यक्ष लाभ भी

हैं जो प्रयत्नकर्ता को अनायास ही प्राप्त होते हैं। जैसे – कार्य करने में व्यवस्था (Systematic), आत्म विश्वास (Self Confidence), आत्म गौरव (Self Esteem), आत्मानुशासन (Self discipline) आदि का विकास हो जाता है। बच्चे विवेकी बनते हैं, शिष्टाचारी, सदाचारी, संवेगों पर नियंत्रण क्षमता वाले बनते हैं। अध्यवसायी और नवाचार प्रिय हो जाते हैं। वस्तुत: हमारे देश को ऐसे ही भावी नागरिकों की आवश्यकता है जो विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व (Leadership) प्रदान कर सकें। लेखक को प्रसन्नता होगी यदि कुछ बच्चे और अभिभावक इस दिशा में प्रयत्नशील हो सकें।

❑❑❑

स्कूलों और कक्षाओं के स्थान का अधिकतम उपयोग शिक्षा के संसाधनों के रूप में किया जाना चाहिए। कुछ जगहों पर, प्राथमिक स्कूलों की कक्षाओं की दीवारें 4 फुट तक काले रंग से पोत दी गई हैं ताकि बच्चे उसका उपयोग चित्रकारी या स्लेट के रूप में कर सकें। कुछ स्कूलों में रेखागणित की आकृतियाँ फर्श पर बनी होती हैं जिसका उपयोग बच्चे विभिन्न गतिविधियों के लिए कर सकते हैं। कमरे का एक कोना पढ़ने की सामग्री, कहानियों की किताबें, पहेली कार्ड और अन्य स्वयं शिक्षा सामग्री को रखने के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। जब कुछ बच्चे अपना पाठ जल्दी खत्म कर लेते हैं तो उन्हें इस कोने में जाने एवं अपनी पसंद की सामग्री चुनने की छूट होनी चाहिए।

— राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005